

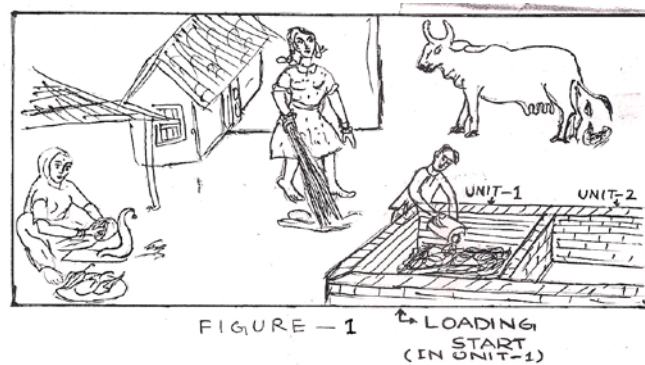
एहि मे कोनो शक नहि जे देश मे हरित क्रान्ति के संगहि रसायन खादक प्रयोग बढ़ि गेल। देशक किछु राज्य रसायनिक खाद पर पूर्णतः निर्भर भऽ गेल, जाहि मे पंजाब, हरियाणा आदि प्रमुख राज्य एकर ज्वलंत उदाहरण अछि। परिणाम भेल जे अनाजक उत्पादन बहुत बढ़ि गेल। एकर देखा-देखि दोसरो राज्य सब रसायनिक खाद व कीटनाशक दवाई के धड़ल्ले सँ उपयोग शुरु भ' गेल। शुरु मे तऽ एकर परिणाम बहुत सुखद भेलैक। अनाजक उत्पादन बढ़ि गेलैक, अनाजक दाना सेहो पुष्ट होबए लागल मुदा, एकर स्वाद आओर पौष्टिकता खतम भऽ गेल। धीरे-धीरे एकर अनेको कुप्रभाव प्रकट होबए लागल जेना माटिक उर्वरा शक्ति समाप्त होबए लागल, मित्र कीट समाप्त होबए लागल। ऐतेक तक जे जाहि 'चाली' (केंचुआ) के खेतक लेल 'प्राकृतिक ट्रैक्टर' कहल जाईत छल ओ सब मरऽ लागल। एतबे नहि एकर प्रभाव माछ आओर चिड़िया पर सेहो पड़ल। ओहि रसायनिक खाद वाला पाईन पोखरि मे जेबाक कारणेँ कतेको माछक प्रजाति समाप्त भऽ गेल, चिड़ियां सब, जे खेतक दाना खलेक त खादक जहर सँ ओहो मरऽ लागल। दोसर तरफ यदि देखल जाय तऽ मानव स्वास्थ्य पर सेहो एकर व्यापक प्रभाव पड़ल। अनाज केँ पाईन में धोलाक बावजूद ओकर तत्व रहिए जाईत छैक, ओहि अनाज केँ खेलाक बाद ओकर कुप्रभाव शरीर पर पड़ऽ लगलैक, गैस्टिक आओर अनेक तरहक बीमारी जन्म लेबऽ लागल। एकर कुप्रभाव के यदि व्यापकता मे देखल जाय तऽ सम्पूर्ण वातावरण/ पर्यावरण पर एकर प्रभाव पड़ल। जेना-जेना रसायनिक खाद व कीटनाशकक प्रभाव बढ़ल तेना-तेना एकर कुप्रभाव सँ सम्पूर्ण वातावरण अओर पर्यावरण प्रभावित होबए लागल। आई एकरा लेल विश्व समुदाय चिंतित भऽ गेल आछि आ विकल्पक रूप मे 'जैविक खेती' सामने आबि रहल अछि। 'जैविक खेती' शब्द भले नव लगैत अछि लेकिन ई हमरा सबहक पारम्परिक खेतीक तरीका अछि। एकर उपयोग आसान अछि, एकरा तैयार केनाई सेहो आसान अछि। लागत कऽ खर्च से हो कम होईत छैक। किछु नव तरीका सेहो वैज्ञानिक लोकनि अविष्कार कैलनि जे फसलक लेल नीक आछि पर्यावरणक दृष्टि सँ सेहो उपयोगी अछि। आउ किछु जैविक खाद

आओर कीटनाशी दवाई के बनेबाक तरीका के हम जानि ली।

### चालीक खाद/ केंचुआ खाद अथवा वर्मी कम्पोस्ट :

अपन मिथिला मे हम जेकरा चाली कहैत छियैक, हिन्दी मे ओकरा केंचुआ तथा अंग्रेजी में स्तजीवतउ कहल जाइत छैक।

एहि सँ बनल खाद के हम चाली खाद/केंचुआ खाद/वर्मी कम्पोस्ट कहैत छियैक। ओना तऽ चाली के 'प्राकृतिक ट्रैक्टर' कहल जाइत अछि। कारण जे ई जमीन मे छेद करैत छैक जाहि सँ जमीनक अन्दर तक ऑक्सीजन जाई छैक आ ओ ऑक्सीजन खेत मे लागल फसलक जड़ि केँ फायदा पहुँचबैत छैक। एहि सँ देखबैक जे हमरा सबहक खेत मे चालि भरपुर मात्रा मे भेटैत छलैक आ जगह-जगह पर माटि के भुरभुरा बनवैत रहैत छलैक। मुदा चाली सँ खाद बनि सकैत छैक ई हमरा सबहक जानकारी मे नहि छल। एकरा बनेबाक प्रक्रिया सेहो आसान अछि। एकरा हम कतहुँ आ कहुना बना सकैत छी। एकरा जमीन में सिमेंट-ईटा के पीट मे सेहो बना सकैत छी। खाली जमीन पर गड़ढा खुनि पॉलिथीन बिछा क सेहो बना सकैत छी आओर बाल्टी, अढ़िया में से हो बना सकैत छी। एहिठाम हम ईटा-सिमेंट सँ बनल बनल स्थायी पीट मे वर्मी कम्पोस्ट बनेबाक विधि जानल जाय। ई स्थायी होइत अछि।

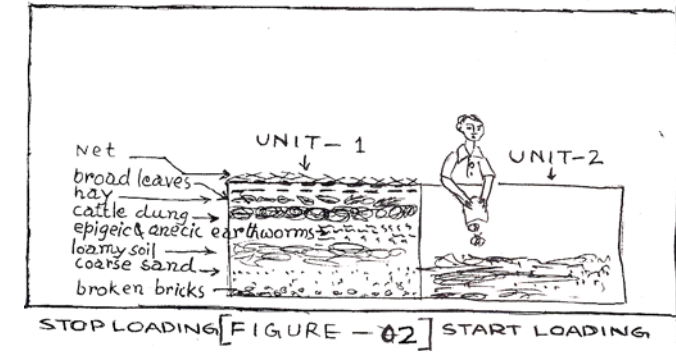


सबसँ पहिने हम पीट बनाबि जाहि मे दुटा खाना होई। पहिल खाना मे तरकारी के छिलका, केलाक थम्म, पत्ता अओर मुलायम चीज भऽ सकाय ओ सब दअ दियोक।

जखन पीटक तीन चौथाई एहि सब सँ भरि जाय तऽ उपर सँ एक चौथाई तक गोबर धऽ दियौ, ओकर बाद 50-100 चाली सेहो धऽ दियौ। ओकर बाद ओहि पीट केँ तारक जालिसँ अथवा कोनो पॉलिथीन आदि सँ झाँइप दियोक। तीन महीना मे सम्पूर्ण पीट मे चायक पत्ती जकाँ माईट निकलऽ लागत, जे वर्मी कम्पोस्ट अछि। वैज्ञानिक लोकनिक दावा अछि जे वर्मी कम्पोस्ट सँ तीन गुणा अधिक पैदावार भऽ सकैत अछि। एहि खादक उपयोग कोनो अनाज, फल-फूल मे कएल जा सकैत अछि। ध्यान रहए जे पीट मे ईटा, कंकड़, सीसा आदि कोनो एहन पदार्थ नहि जाय जे चालि नहि खा सकै। ईहो ध्यान रहए जे पीट मे थोड़े-थोड़े दिन पर पाईन दैत रहब आवश्यक जाहि सँ पीट मे नमी बनल रहय।

### कम्पोस्ट निर्माण :

कम्पोस्ट निर्माण प्रक्रिया पर बहुत चर्चा करबाक आवश्यकता एहि दुआरे नहि अछि जे हमर सबहक पूर्वज एहि कम्पोस्ट के निर्माण करैत छलाह। तैयो थोड़े जानकारी एहि प्रकारेँ अछि जे जमीन मे अथवा ईट-सीमेंट सँ पीट बनाकऽ ओहि मे पोआर, केलाक धम, केलाक पत्ता, तरकारी क छिलका, गोबर आदि सँ भरि दी तथा अन्त मे माटि हल्का परत सँ ओकरा ढकि दी। एक वर्षक बाद कम्पोस्ट तैयार भऽ जाएत। तखन एकरा खेत मे प्रयोग कएल जा सकैत अछि।



एहि दुनू तरहक खाद सँ मात्र फसलकेँ लाभ नहि होइत अछि अपितु घर-बाहरक गंदगी के सेहो प्रबंधन

होइत अछि। माईटक उर्वरा शक्ति सेहो बनल रहैत अछि, खेत मे पाओल जाय बला जीव सबहक सेहो रक्षा होईत अछि, कृषि कार्यक लागत खर्च सेहो कम होइत छैक। सबसँ पैघ बात जे एहि सँ पर्यावरणक रक्षा होइत अछि जे आई सबसँ पैघ समस्या समस्त मानवताक लेल अछि।

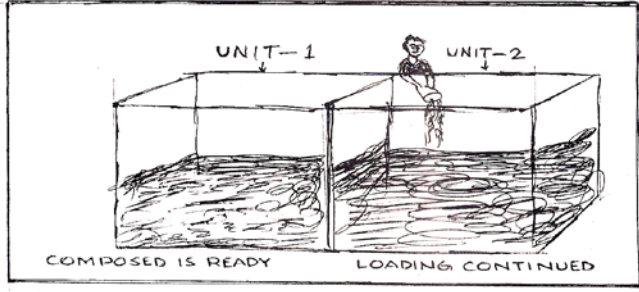


FIGURE - 3

### तम्बाकु डांट सँ कीटनाशक दवाई बनावी :

कीटनाशक दवाई क प्रभाव सीधा किसान तथा अनाजक उपभोक्ता पर पड़ैत छैक। किसान जे बाजारु रसायनिक कीटनाशक छिड़काव करैत छथि ओ बिना मुँह व नाक के झपने करैत छथि जाहि सँ कीटनाशक कण/बून्द हुनका मुँह व नाक देने शरीर में जाईत छन्हि एहिसँ हुनक स्वास्थ्य केँ सीधा प्रभावित होइछ। एहि तरहँ जे कीटनाशी प्रयोग वला उत्पाद के सेवन करैत छथि हुनको स्वास्थ्य प्रभावित होइत छन्हि। कारण जे पाईन सँ धोलाक बादो कीटनाशी रसायन के प्रभाव समाप्त नहि होइत अछि। एहि विकल्प के रूप मे हम घरेलू विधि सँ कीटनाशी बना सकैत छी।

तम्बाकु पात छोड़ेलाक बाद ओकर गाँठ एकत्रित कऽ लिअ। 4-5 किलो डांट एकत्रित भेलाक पश्चात् ओकरा एकटा पैघ कराही मे राखि कऽ यथा मात्रा मे पाईन धऽ दियौक। तकरा बाद ओकरा आगि पर राखि कऽ गरम कऽ दियौक। खुब गरम भेलाक बाद डांट के निचोरि कऽ निकालि दियौक तथा शेष पानि के कीटनाशक रूप मे प्रयोग करु। खुब फायदा होएत। ई रसायनिक कीटनाशीसँ

बेसी प्रभावी होईत अछि। एहि क्रिया मे यदि नीमक पत्ता मिला दैत छियैक तऽ एकर प्रभाव आओर बढ़ि जाइत छैक।

### नीमक पातसँ कीटनाशी निर्माण :

एहि तरहँ हम नीमक पातसँ सेहो उपयोगी कीटनाशी बना सकैत छी। स्वतंत्र रूपसँ नीमक पातकेँ पानि मे यथा मिश्रण कऽ गरम केलाक बाद ओकरा ढंडा कऽ कीटनाशीक रूप मे उपयोग क सकैत छी।

### गोमुत्र सँ कीटनाशी निर्माण :

गोमुत्र अपने आप मे एकटा महत्वपूर्ण कीटनाशी अछि। गोमुत्र मे कम सँ कम पाँच भाग पानि मिला कऽ यदि हम फसल पर छिड़काव करि तऽ सर्वोत्तम सफलता भेटैत अछि।

### अन्न भण्डारण मे नीमक पातक उपयोग :

अन्न भण्डारण मे सेहो हम नीमक पात अथवा नीमक पातक चूर्ण बना कऽ कोनो अन्न मे मिला कऽ भण्डारण करी तऽ कोनो तरहक कीड़ा आदि नहि लगैत अछि।

एहि प्रकारेँ केलाक थम्म के उपयोग ई अछि जे एकरा यदि खेत मे फेंक दैत छियैक तऽ घुन सँ बचाव होएत। कोनो पौधा केँ जड़ि के यदि पुनः खेत मे छोड़ि देल जाय तऽ ओ खादक रूप मे कार्य करऽ लागैत छैक।

एहि तरहँ हम कृषिकेँ सुरक्षित आ कम खर्च मे नीक उपजा तऽ प्राप्त करिये सकैत छी संगहि पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्यकेँ हम सेहो सुरक्षित राखि सकैत छी।

उपर लिखल तरीका तऽ मात्र नमूना अछि। एकर अलावा सेहो कतेको तरीका अछि जे कृषि व पर्यावरणक लेल उपयोगी अछि। जेकरा हम बिसरि गेलियैक अछि आ बाजार दिस भागि रहल छी। परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण मानव जीवन पर एकटा प्रश्न चिन्ह टाढ़ भऽ गेल अछि। एहि सँ बचवाक हेतु जैविक विधि के प्रोत्साहित करु।

“परिवर्तन परिहारपुर संस्थान, मधुबनी एवं लिंक आओर आई०पी०ई०एन० केँ संयुक्त आह्वान”

“रसायन मुक्त खेतीक प्रोत्साहन”



परिवर्तन परिहारपुर संस्थान,  
परिहारपुर, राजनगर, मधुबनी-847235  
तरफ सँ जनहित व पर्यावरणक सुरक्षा हेतु  
प्रकाशित व वितरित